© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

समकालीन सामाजिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि पर भारती जी के विचार : एक अध्ययन

शोधकर्ता : रोहताश

सामाजिक पृष्ठभूमि और भारती :वस्तुतः समाज से लेखक, लेखक से साहित्य और साहित्य में पुनः समाजविकसित होता है तथा मूल्यों का विकास समाज में ही होता है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसीलिए मनुष्य की प्रतिभा का स्त्राोत और क्षेत्र समाज से ही प्रारम्भ होता है। सामाजिक संरचना एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है अतः यह स्वाभाविकहै कि कोई भी समाज स्थिर नहीं रह सकता है।

अज्ञेय ने ठीक ही कहा है–ये सांस्कृतिक मूल्य सामाजिक मूल्य होते हैं और हमारे चेतना सम्पन्न जीवन को विस्तार देते हैं। व्यक्ति समाज में ही रहकर इन मूल्यों को ग्रहण करता है और समाज में ही युगानुरूप इन सांस्कृतिक मूल्यों में विकासऔर बदलाव होता रहता है। संस्कृति पहले भारतीय परम्परा में ध्र्माश्रित थी, लेकिन उन्नीसवीं शती से क्रमशः स्पष्टतर होती हुई सामाजिक शक्तियों के घात–प्रतिघात मेंजब भारतीय सामाजिक आचरण के मानदण्ड लौकिक अथवा मानवीय आधरों पर बनने लगे तब उसकी संस्कृति लौकिक आधरों पर आश्रित जीवन–परिपाटी बन गयी। भारतीय संस्कृति के आधर पर यहाँ जिस समाज का संगठन किया गया था उसमें वर्णाश्रम ध्र्म की स्थापना करते हुए यहाँ के ट्टषियों एवं मनीषियों ने उसे इतना सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित बनाने की चेष्टा की थी कि जिससे मनुष्यों को किसीप्रकार के संकटों का सामना न करना पड़े और सभी सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें।फ्परम्परा और परिस्थिति की पृष्ठभूमि में उसकी वह अदम्य जिजीविषासक्रिय रूप में प्रतिपफलित होती है किन्तु यह प्रक्रिया निरर्थक या यान्त्रिाक नहीं है, वहसार्थक है और लक्ष्ययुक्त है। उसका लक्ष्य अपने अस्तित्व और चेतना की ऊपरी परतोंके नीचे बहुत गहरे में निहित अपने वास्तविक भाव को खोजना, खोजकर अपनीअगणित वा"य प्रक्रियाओं, आचरणों और सामाजिक सम्बन्धें में उससे तादात्म्य स्थापितकरना और अपने समस्त जीवन व्यपार में निरन्तर यह प्रयाास करना कि आत्मोपलब्धिके इस सत्य का एक अंश, जिस पर उसकी खोज, उसकी विजय, उसकी महत्ता कीछाप हैऋ ऐसा एक अंश वह किसी न किसी रूप में प्रवाहमान सामाजिक जीवन को देजाय।

उपर्युक्त उ(रण के समर्थन में हम कह सकते हैं कि मनुष्य में जीवन धरण करने की सामर्थ्य सामाजिक परम्परा और परिस्थितियों में प्रतिपफलित होती है।चारों वर्णों एवं वर्गों के निर्माण का रहस्य भी यही था कि समाज सभी से मर्यादित बनारहे तथा सद्भाव व सौमनस्य की स्थापना हो और सभी व्यक्ति अपनी सामर्थ्य

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

केअनुसार समाज की सेवा करते रहे और पारस्परिक सम्बन्ध मधुर हो और इन सबसेनिर्मित होने वाला मानव व्यक्तित्व अपरिमित सम्भावनाओं को छिपाये रहता है इसीलियेभारती जी ने कहा है–फ्मनुष्य और मनुष्य का रागात्मक अथवा सामाजिक सम्बन्ध्मनुष्य का निरपेक्ष सत्य, मर्यादा, मूल्य या किसी अरूप भावात्मक अथवा आदर्शात्मकसत्ता से सम्बन्ध, इन सम्बन्धें की विविध्ता और इनका वैचित्रय तथा इन सबके जटिलप्रभाव से निर्मित होने वाला मानव व्यक्तित्व अपनी असंख्य विविध्ताओं में अपरिमितसम्भावनाओं को छिपाये रहता है। भारती मूलतः एक मूल्यान्वेषी सर्जक कलाकार हैं जिनमें परम्परा और युगसापेक्ष दृष्टि का सम्यक् निर्वाह हो सका है। इसीलिए उन्होंने समाज में व्याप्तविषमताओं को विवेक के माध्यम से ही स्वीकार किया है और समाज में व्याप्त कुरीतियोंको छोड़ने के लिए कहते है क्योंकि ये कुरीतियाँ और विषमतायें ही मनुष्य को विकलांगबनाती हैं इसीलिये–फ्पुराने मूल्य अब मिथ्या पड़ने लगे हैं। ऐसी श्र(ा और आस्था जोहमें नरबलि तक के लिये विवश करे और वह करूणा जो दान–दया के द्वारा व्यक्त होपर समाज के वैषम्य को विध्ि का विधन मानकर स्वीकार कर ले–इस प्रकार की श्र(ाऔर करूणा अमानवीय वृत्तियों को जन्म देते हैं। वे मानवीय गौरव को प्रतिष्ठित करनेकी बजाय विकलांग बनाते हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन के बाद भारती जी पूर्णतःउपनिषद और भारतीय दर्शन से प्रभावित थे क्योंकि उनका आत्मचिंतन, आत्मोपलब्ि, सामाजिक चिंतन और सामाजिक उपलब्धि आदि उसमें विद्यमान थे। इसीलिये वेशाश्वत मूल्यों को अपनाकर समाज में स्थायित्व लाना चाहते थे जिससे सामाजिकव्यवस्था सुचारू ढंग से चल सके। भारती जी सभी ध्र्मों को समान मानते थे। इसीलियेवे कहते हैं- हमारा ध्र्म हमें यह सिखाता है कि इंसानियत, हमदर्दी और ाईचारा सब अपने ही ध्र्म वालों के लिये हैं, उस दायरे के बाहर जितने लोग हैं सभीगैर हैं और उन्हें जिन्दा रहने का कोई हक नहीं तो मैं उस ध्र्म से अलग होकर विध्र्मी होना ज्यादा पसंद करूँगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारती जी आध्ुनिकता में रूढ़िवादिता काविरोध् करते दिखाई देते हैं परन्तु सम्पूर्ण परम्परा का विरोध् नहीं करते हैं यदि हमभारती जी के कथा साहित्य का अवलोकन करते हैं तो हमें सामाजिक यथार्थ कारेशा–रेशा उजागर एवं जीवित दिखाई देता है, जिसमें मध्य वर्गीय समाज की विषमताओंतथा रूढ़ियों का यथार्थ चित्राण हुआ है जिसमें भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति काचित्राण किया गया है–हाय! हमें काहे को छोड़ दियौ! तुम्हारे सिवा हमारा लोक–परलोकऔर कौन है! अरे हमरे मरै कौन चुल्लू भर पानी चढ़ायी.....हमारी प्राचीन परम्परा की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि हम उन्हें काटकररातों–रात बुहार नहीं सकते हैं इसीलिये पति चाहे मारे चाहे काटे पर पत्नी उसे छोड़

नहीं सकती और हर समय उसे पति का दासत्व स्वीकार करना पड़ता है। प्राचीन कालमें नारी को पुरूषों के समान अध्किार प्राप्त थे और नारी को सम्मान की दृष्टि से देखाजाता था मध्य काल से नारी को उपेक्षित किया गया है। सदियों से पुरूष के शोषण काशिकार होती हुई भारतीय नारी आज अपनी स्वतंत्रा

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

पहचान बनाने के लिये संघर्षरत हैऔर वह सभी क्षेत्राों में पुरूषों से अध्कि दक्षता, कुशलता और सपफलता पा रही है।

राजनैतिक पृष्ठभूमि और भारती :राजनैतिक पृष्ठभूमि और भारती :राजनैतिक पृष्ठभूमि और भारती :राजनैतिक पृष्ठभूमि और भारती :राजनैतिक पृष्ठभूमि और भारती :राजनीति ने समाज को सदैव प्रभावित किया है। यहाँ तक कि किसी किसी काल में तो हम तद्युगीन राजनीति से परिचालित तक हुए हैं। प्रत्येक युग का साहित्यकार कवि या कलाकार अपने युग की राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, वस्तुतः राजनीति यहाँ सिर्फ राजनैतिक गतिविध्यिों तक सीमित न रहकर समाज के माध्यम से हमारी चेतना को गहरे तक प्रभावित करती है इसीलिये भारती जीने कहा है–भारत में सदा से राजनीति को चिन्तन से अनुशासित एवं मूल्यों से अनुप्रेरित रखा गया था। जिस–जिस ने जिस भी काल में इस मर्यादा को निभाया वह राजा या उसका राज्य काल स्मरणीय रहे और देश के इतिहास को सही दिशा में मोड़त`रहे। भारतीय संस्कृति में तो अति प्राचीन काल से ही राजा की महत्ता का`स्वीकार किया जाता रहा है। वह सभी आदर्शों से सम्पन्न प्रजा का रक्षक एवं पालक होता था। मध्य युगीन राजनीति में ध्र्म और नैतिकता दोनों एक–दूसरे में समाहित थी।ध्र्म सनातन है, असीम है, अपरिमित है। सत्य का आनन्द का, प्रकाश का स्त्राोत है।जो नैतिकता के आवरण में ढक गया है। हमारे देश में गाँधी जी ने जब स्वराज्य कीपरिभाषा की थी तब उन्होंने 'राम–राज्य' शब्द का व्यवहार किया था राजनीति में इन्हींनैतिक प्रतिमानों को समाहित कर विशेष उपलब्धि प्राप्त की थी–फ्हमारे देश में महात्मागाँधी ने राजनीति को नैतिक प्रतिमानों से सम्ब(कर जो एक नया प्रयोग किया उसकीअपनी विशेष उपलब्धियाँ भी थीं। गाँधी जी सच्चे अर्थों में राजनीतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करते प्रतीत होतेहैं। परन्तु आधुनिकता ने समस्त संसार में राजनीति को प्रभावित किया है। आजप्रजातंत्रा, लोकतंत्रा, समाजवाद, पूँजीवाद आदि को विशेष महत्व दिया जाता है कि येमानव मुक्ति को लक्ष्य बनाकर चल रही हैं, ये मुक्ति व्यक्ति को बा"य और आंतरिकदोनों रूपों में मिलनी चाहिये इसीलिये–फ्मानव–नियति के सन्दर्भ में राष्ट्र के नव–निर्माणके प्रति अपना दायित्व अनुभव करता है, उसके लिये सबसे प्रमुख चिन्ता हो जातीहै–'सामान्य जन की मुक्ति'। भारत की स्वतंत्राता तब तक सार्थक नहीं है जब तकसामान्य जन स्वतंत्रा नहीं है। सामान्य जन के स्वतंत्रा होने का अर्थ यही नहीं है कि उसेभरपेट भोजन, जरूरत के मुताबिक कपड़ा मिल जाय। यह भी है तथा इसके अलावाऔर बहुत कुछ भी हैं। उसके मानस में जो अन्ध रूढ़ियाँ हैं, कुण्ठाएँ हैं, अविवेक है,मूर्च्छना है, मृत परम्पराएँ आदि प्रवृत्तियाँ हैं, जिनके कारण वह युग–युग से दास बनताचला आया है–उसे भी उनसे मुक्त कराना है। स्वतंत्राता प्राप्ति के कुछ दिनों बाद ही देश की राजनीतिक मर्यादा भंग होनेलगी और जो आदर्श निर्धरित किये गये थे उनका अवमूल्यन होता चला गया चारोतरपफ स्वार्थ की राजनीति होने लगी और अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिये अनुचित

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

तरीकों का भी प्रयोग होने लगा।विदेशी यात्राओं में निहित स्वार्थों वाली राजनीति पर करारा व्यंग्य करतेहुए–अपनी 'मुनादी' कविता में भारती जी ने लिखा है–फआखिर क्या दुश्मनी है तुम्हारी उन लोगों सेजो भले मानुसों की तरह अपनी कुर्सी पर चुपचाप बैठे–बैठे मुल्क की भलाई के लियेरात–रात जागते हैं,और गाँव की नाली की मरम्मत के लिएमास्को, न्यूयार्क, टोकियो, लंदन की खाकछानते पफकीरों की तरह भटकते रहते हैं.....। भारती जी नेताओं के झूठे भाषणों के खिलापफ आवाज उठाते हैं–फवे सब बीमार हैंवे जो उन्मादग्रस्त रोगी–सेमंचों पर जाकर चिल्लाते हैंबकते हैंभीड़ में भटकते हैं ऐसा लगता है सभी नेता मानसिक रूप से बीमार हैं तभी वह विक्षिप्त कीतरह चिल्लाते हैं। वस्तुतः देश में कुछ ऐसे गद्दार होते हैं, जो कई बार खरीद लिये जातेहैं पर सभी को खरीद पाना सम्भव नहीं है इसीलिये चेतावनी देते हुए कवि कहता है–फचेक बुक हो पीली या लाल,दाम सिक्के हों या शोहरत–कह दो उनसे

जो खरीदने आये हों तुम्हेंहर भूखा आदमी बिकाऊ नहीं होता है। जब व्यक्ति स्वार्थ की परिधि को त्याग देता है तो उसमें स्वाभिमान औरआत्म–सम्मान जग जाता है और पिफर उसे किसी भी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकताहै क्योंकि उसे सत्य की पहचान हो जाती है।इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारती ने अपने साहित्य में राजनैतिकमूल्यों की प्रतिष्ठा विशेष रूप से की है ये गाँधी जी के विचारों एवं आदर्शों से प्रभावितथे लेकिन स्वतंत्राता के पहले जिन विचारों को प्रतिष्ठित करने के लिये सोचा गया थाउसमें एक भी पूर्ण नहीं हुआ।इस संदर्भ में भारती जी के विचार दृष्टव्य है–फपिछले पच्चीस वर्षों में विश्वके राजनीतिक जीवन में जो–जो आदर्श उपस्थित किये गये उनमें से एक को भी अभीतक पूर्ण विकास का अवसर नहीं मिल सका। राजनीतिक दृष्टि में आज किसी प्रकार की मर्यादा, शालीनता एवं देशहितआदि को स्थान नहीं मिल रहा है वरन् सभी तरपफ आपा–धपी है। अधिकार लिप्सा,महँगाई, भ्रष्टाचार एवं चोर बाजारी का साम्राज्य प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, नेता लोगअपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये निरपराध लोगों की बलि चढ़ा देते हैं उनके प्रति आक्रोशव्यक्त करते हुए भारती जी कहते हैं–फजीप अगर बाश्शा की है तोउसे बच्चे के पेट पर से गुजरने का हक क्यों नहीं?आखिर सड़क भी तो बाश्शा ने बनवायी है।बुड्ढे के पीछे दौड़ पड़ने वालेअहसान पफरामोशों! क्या तुम भूल गये कि बाश्शा नेएक खूबसूरत माहौल दिया है जहाँभूख से ही सही, दिन में तुम्हें तारे नजर आते हैं।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं

1 राजनीतिक मूल्यहीनता के रूप में सबसे बड़ाकारण नेताओं के व्यक्तित्व का दोहराव है उनकी चरित्राहीनता तथा स्वार्थ के कारण हीदेश की यह स्थिति है। भारती प्रजातंत्रा के मूल्यों में विश्वास क्योंकि प्रजातंत्रा के द्वाराही समाज और राष्ट्र का कल्याण सम्भव है, जिससे देश विकास की ओर अग्रसर होताहै।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

2 सामाजिक मूल्यों का केंद्र जन कल्याणकी धरणा होती है क्योंकि मानव समाज में ही मूल्यों का संगठन एवं संकलन है। मूल्योंके द्वारा ही मानव अपनी इच्छाओं, आंकाक्षाओं एवं आदर्शों को प्राप्त करता है इनकाविकास समाज के द्वारा ही सम्भव है। भारती जी सामाजिक सम्बन्धें की पवित्राता बनायेरखने के लिये मर्यादा को स्वीकारते हैं।

`सन्दर्भ :

1 गुप्ता अरुण छठें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन–मूल्य इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण
2 गोयल उषा हिन्दी कहानी चरित्रा चित्राण का विकास मंथन पब्लिकेशन, दिल्ली
3 चतुर्वेदी रामस्वरूप स्मकालीन हिन्दी साहित्य–विविध परिदृश्य राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली चौहान विद्या आधुनिक हिन्दी समीक्षा की प्रवृत्तियाँ संचयन,
4 चौट्टषि शंकरदयाल द्विवेदी युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन
5 जायसवाल अमर हिन्दी लघु उपन्यास विद्याविहार गांधि नगर, कानपुर
6 जियासु मोहनलाल कहानी और कहानीकार आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, द्वितीय संस्करण
7 जैन महावीर सदन भाषा एवं भाषा विज्ञान लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8 जैन नीरज आधुनिक हिन्दी उपन्यास–व्यक्तित्व विघटन के निकष पर निर्मल पब्लिकेशन,
9 जैन सविता हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अनुशीलन आर.के. ऑपफसेट, सागर
10 जैन रवीन्द्र कुमार उपन्यास सि(ान्त और संरचना नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
11 झा कौशलेन्द्र कथा भारती ;कहानी संकलनद्ध मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल